अध्याय तृतीय

शोध की प्रविधि

अध्याय तृतीय

शोध की प्रविधि

3.1 भूमिका

किसी भी कार्य को सही रूप से पूर्ण करने के लिए उस कार्य की अपनी विधियाँ होती है। अनुसंधान कार्य को सही दिशा प्रदान करने के लिए शोध प्रबंध की व्यवस्थित रूपरेखा अति आवश्यक है। क्योंकि इन्ही विधियों के माध्यम से ही अनुसंधानकर्ता अपनी समस्या के लक्ष्य तक पहुँच सकता है। समस्या निराकरण के लिए इसमें न्यादर्श चयन, उपकरण एवं तकनिकी का चयन प्रदत्तों को संकलन एवं की सांख्यिकी विधि से प्रदत्तो का विश्लेषण कर उन्हीं के आधार पर निष्कर्ष यानि अंतिम लक्ष्य तक पहुंचने के लिए शोध प्रबंध के अनुसार इन विधियों की अपनी विशेष भूमिकाएँ होती है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शोध विधि सर्वे अनुसंधान से की गयी है। जिनमें शिक्षक–प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का सर्वे कर उन पर विचार विमर्श किया गया है।

3.2 न्यादर्श चयन

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु न्यादर्श के रूप में गुजरात राज्य के दो जिलो का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी से किया गया। जिनमें एक शासकीय एवं दो अशासकीय अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श तकनीकी से किया गया है। इस प्रकार कुल तीन महाविद्यालयों में से लिंग के अनुसार 150 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया है। अध्ययन के न्यादर्श का प्रस्तुतीकरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है –

न्यादर्श का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्श प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रशिक्षार्थियों की अंक सूची

तालिका क्र.3.41

जिला	कालेज के प्रकार	प्रशिक्षणार्थी		कुल
		पुरूष	महिला	
राजकोट	शासकीय	35	40	75
जूनागढ़	अशासकीय	38	37	75
कुल	2	73	77	150

3.3 शोध के चर

प्रस्तुत अनुसंधान में स्वतंत्र चर और आश्रित चर के अन्तर्गत देखा जाएं तो

स्वतंत्र चर में –

- **लिंगगत चर :** (छात्र एवं छात्राएँ)
- **जातिगत चर :** (एस.टी., एस.सी., ओ.बी.सी. तथा सामान्य)
- **क्षेत्रिय स्थिति :** (ग्रामीण एवं शहरी)
- **शैक्षिक स्तर :** (स्नातक एवं अनुस्नातक)
- **कॉलेज स्तर :** (शासकीय एवं अशासकीय)
- **विषयगतता :** (भाषा, सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान)

आश्रित चर में. अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति।

3.5 प्रदत्तों के संकलन हेतु प्रयुक्त उपकरण –

अनुसंधान कार्य में प्रयुकत समस्या से सम्बंधित ठोस महिती का संग्रह करने के लिए उपयुक्त उपकरणों का चयन किया जाता है। उपकरण विश्वसनीय, वस्तुनिष्ठ एवं वैद्य होना चाहिये।

प्रस्तुत शोध में शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों के अध्यापन संबंधी अभिवृत्ति के आंकडों (भारिती) का संग्रह करने के लिये मनोवैज्ञानिक मानकीकृत

परीक्षण डॉ. एस.पी. अहुलूवालिया की **''अध्यापक अभिवृत्ति सूची''** का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत सूची में 90 कथन है, जिनका उद्देश्य प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन संबंधी अभिवृत्तियों को ज्ञात करना है। इन कथनों के कोई निर्धारित सही या गलत उत्तर नहीं है? इसके द्वारा केवल यह जानने का प्रयास किया गया है कि अध्यापन अभिवृत्ति के प्रति प्रशिक्षणार्थियों के व्यक्तिगत विचार क्या है।

अध्यापक अभिवृत्ति सूची में इस प्रकार से प्रशिक्षणार्थियों को निर्देश दिये गये है कि ''प्रत्येक कथन को पढ़िये तथा निर्णय कीजिए कि आय का इसके संबंध में क्या विचार या अनुभव है। ऐसा करने के लिये उत्तर पत्र में दिये गये पांच खानों में से किसी एक पर सही का चिन्ह् ☑ अंकित करना है। यदि वह कथन से पूर्ण सहमत है तो उक्त कथन के क्र.नं. के पहले खाने में, यदि सहमत है तो दूसरे खाने में, यदि अनिश्चित या द्विधा में हो तो तीसरे खाने में, यदि असहमत हो तो चौथे खाने में, तथा यदि पूर्ण असहमत हो तो पांचवे खाने में ☑ सही का चिन्ह अंकित करना है।

उततर देते समय किसी विशेष परिस्थिति का ख्याल न करते हुए सामान्य परिस्थिति के संबंध में सोचने को कहा गया है। यद्यपि समय का कोई प्रतिबंध नहीं है फिर भी जितना संभव हो शीघ्र कार्य करने के लिए सूचना दी गई है।

यह सूची छः भागों में विभक्त की गई है। हर भागो में 15 कथन है जो प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्तियों को दर्शाते हैं। जो इस प्रकार है।

1. अध्यापन व्यवसाय संबंधी अभिवृत्ति।
2. कक्षाध्यापन संबंधी अभिवृत्ति।
3. छात्र केन्द्रित व्यवहारों संबंधी अभिवृत्ति।
4. शैक्षिणिक प्रक्रिया संबंधी अभिवृत्ति।
5. छात्रों संबंधी अभिवृत्ति
6. शिक्षकों के प्रति अभिवृत्ति

सामाजिक पृष्ठ भूमि के अध्ययन के लिए **'सामाजिक प्रष्ठभूमि प्रपत्र'** का निर्माण स्वयं अनुसंधानकर्ता द्वारा किया गया।

जिनके अन्तर्गत सामाजिक पृष्ठभूमि में शिक्षण–प्रशिक्षणार्थियों का नाम (Name), पता (Address), लिंग (Sex), जाति (Cast), क्षेत्र (Area), धर्म (Religion), Degree (स्नातक/अनुस्नातक) काल के प्रकार (शासकीय/अशासकीय) एवं (College) कॉलेज का नाम आदि का समावेश किया गया है।

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरणों का प्रशासन

शोध उपकरणों के प्रशासन के लिये 15 दिन का समय निश्चित किया गया था। इन दिनों में अनुसंधानकर्ता ने प्रपत्रों की पूर्ति स्वयं सब कालेजों में जाकर करवाई।

कालेजों के प्राचार्यो से एक–दो दिन पहले मिलकर अपने कार्य एवं उद्देश्य से परिचित कराया, तथा उनसे अनुमति लेकर ही कार्य को आगे बढाया था।

प्रपत्रों के वितरण से पहले अनुसंधानकर्ता ने सभी प्रशिक्षणार्थियों से अपने अनुसंधानकार्य के महत्व और उद्देश्य से अवगत कराया एवं सहयोग देने का अनुरोध किया।

अनुसंधानकर्ता ने प्रशिक्षणार्थियों को उपकरण संबंधी निम्नलिखित निर्देश दिये

- सर्व प्रथम व्यक्तिगत जानकारी की पूर्ति करने के लिए कहा गया।
- उन्हें इस बात का विश्वास दिया गया कि इस बात की जानकारी का उपयोग केवल अनुसंधान कार्य में ही किया जाएगा।
- प्रपत्रों से प्राप्त सूचनाएँ पूर्ण रूप से गोपनीय रखी जायेंगी।
- प्रक्षिणार्थियों को तटस्थतापूर्वक सभी कथनों के उत्तर देने का अनुरोध किया गया।

- प्रशिक्षणार्थियों को शोध उपकरणों से संबंधित आवश्यक जानकारी से अवगत कराया गया।
- प्रपत्रों की पूर्ति के बाद उसको वापस लिया गया।

3.6 प्रदत्तों के संकलन में उत्पन्न कठिनाईयाँ

- जूनागढ और राजकोट जिले में शासकीय कालेज कम है और उस समय वार्षिक पाठ आयोजन चल रहा था, तथा कई कालेजों में इनटर्नशिप कार्यक्रम चल रहे थे। जिसमें से प्रशिक्षणार्थियों का तुरंत मिलना सरल नहीं था।
- वार्षिक पाठ कार्यक्रम के कारण प्रशिक्षणार्थियों के दो ग्रुप थे जिनमें एक–एक ग्रुप को उपस्थितानुसार दो बार माहिती संकलित करने के लिये जाना पड़ा।
- प्रशिक्षणार्थियाँ ज्यादातर गुजराती भाषा के जानकार थें और प्रपत्र हिन्दी भाषा में था तो कहीं–कहीं कुछ शब्दों की समझ देनी पडी थी।

3.7 उपकरणों से संकलित प्रदत्तों की अंकन विधि

शोध कार्य को साकारीत करने के लिए प्राप्त प्रदत्तों का का अंकन करना जरुरी है जिनसे हम निष्कर्ष संचोट एवं सरलता से निकाल सके।

प्रस्तुत शोध कार्य में प्रयुक्त की गई डॉ. एस.पी. अहलुवायिा द्वारा निर्मित 'अध्यापक अभिवृत्ति सूची' में 90 कथन दिये है। जिनमे 43 'सकारात्मक अभिवृत्ति' दर्शाते है तथा 47 'नकारात्मक अभिवृत्ति' दर्शाते है।

सकारात्मक कथनो के लिये इस प्रकार अंक दिये गये है–

- पूर्णतः सहमत के लिए चार
- सहमत के लिये तीन
- अनिश्चित के लिये दो
- असहमत के लिये एक नया
- पूर्णतः असहमत के लिए शून्य

अंक दिये गये है।

नकारात्मक कथनो के लिए इस प्रकार अंक दिये है–

- पूर्ण–सहमत के लिए शून्य
- सहमत के लिए एक
- अनिश्चित के लिए दो
- असहमत के लिए तीन
- पूर्णतः असहमत के लिए चार अंक दिये गये है।

शोधार्थी द्वारा गणना करने के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल कथनो की उत्तर सूचि बनायी गयी थी। अंत में सभी विभागों का कुल योग किया गया।

3.9. प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय

सांख्यिकीय प्रविधियों के अध्ययन से हमें प्राप्त माहिती के अंको का मापन कर उसका सही रूप से विश्लेषण कर सकते है।

प्रस्तुत शोध कार्य से संबंधित प्रदत्तों के सारणीय करने के बाद उचित परिणाम प्राप्त करने के लिए उपयुक्त सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। जिससे निष्कर्षो एवं परिणामों की विश्वसनीय रूप से व्याख्या की जा सके। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रदत्तों के विश्लेश्ण के लिए मध्यमान, मानक विचलन टी. परीक्षण एवं एफ. परीक्षण का प्रयोग किया गया है।